HISTORY

B.A.PART-II (Subs)

Paper-II [History of India (1526-1947 AD)]

UNIT-III, (BATTLE OF BUXER)

Dr. GUDDY KUMARI

(Guest Lecturer), History Deptt.

A.N.D. College, Samastipur

Lecture Series - 46

"बक्सर की लड़ाई के कारण और परिणाम"

(Cause And Aftermath of Battle of Buxer)

Dr Guddy Kumari (A.N.D College)

मीरकासिम रक्तहीन क्रांति के माध्यम से 1760 ई में बंगाल का नवाब बना, परंतु बंगाल की नवाबी उसके लिए फूलों की सेज के बदले कांटों का ताज साबित हुआ। 1757 ई के बाद बंगाल की गद्दी पर बैठने वाले व्यक्तियों में मिरकासिम सबसे अधिक योग्य एवं दूरदर्शी था। उसने अपने साहस एवं कूटनीति के सहारे बंगाल में अपनी स्थिति सुदृढ़ की। वस्तुतः वह एक योग्य प्रशासक था परंतु उसकी योग्यता ही उसके पतन का कारण बनी। वह अंग्रेजों के हां में हां मिलाने वाला शासक नहीं था। अतः दोनों के बीच संघर्ष का होना अनिवार्य था।

बक्सर युद्ध के कारण..

सत्ता का प्रश्न:- मीर कासिम एक योग्य एवं कुशल शासक था। वह बंगाल को कंपनी के निरंतर हस्तक्षेप से बचाना चाहता था। कंपनी के अधिकारी समझ गए कि नवाब व्यवहारिक रूप में शासन सूत्र अपने हाथ में लेना चाहता है परंतु वे नहीं चाहते थे कि नवाब किसी तरह शासन पर अपना प्रभाव कायम करें। वह नवाब को नाममात्र के शासक के रूप में देखना चाहते थे परंतु मीर कासिम अंग्रेजों की कठपुतली बनने के बदले बंगाल का वास्तविक नवाब बनना चाहता था। अतः सत्ता का प्रश्न दोनों के बीच संघर्ष का कारण बना।

राजा राम नारायण का प्रश्न:- मीर कासिम बिहार के नायब दीवान रामनारायण को गबन के आरोप में दंड देना चाहता था। लेकिन रामनारायण भागकर अंग्रेजों के शरण में चला गया परंतु अंग्रेज अधिकारी वैन्सिटार्ट ने नवाब की प्रतिष्ठा को ध्यान में रखकर रामनारायण को मीर कासिम के हाथों में सौंप दिया। इससे नवाब का मनोबल बढ़ा और वह अंग्रेजों से युद्ध का साहस किया।

शाही फरमान का दुरुपयोग:- कंपनी और नवाब में संघर्ष का दूसरा प्रमुख कारण यह था कि कंपनी के कर्मचारी मुगल सम्राट से प्राप्त निशुल्क व्यापार करने के शाही फरमान का दुरुपयोग कर रहे थे। इससे नवाब को आर्थिक क्षति पहुंच रही थी। इसकी चर्चा करते हुए मिरकासिम ने वैन्सिटार्ट को लिखा था कि देश की सरकार मेरे हाथों में नहीं है। इसका

Dr.Guddy Kumari (A.N.D College)

मुख्य कारण यह है कि कोलकाता की कोठी से लेकर कासिम बाजार पटना और ढाका तक जितने भी अंग्रेज प्रमुख, उनके गुमास्ते अफसर और एजेंट है। सभी प्रत्येक जिले में ऐसा व्यवहार करते हैं, मानो वे कलेक्टर जमींदार और तालुकदार हो। हर जगह वे कंपनी का झंडा गाड़ते हैं और अफसरों को काम करने से रोकते हैं।

मीर कासिम द्वारा की गई करवाई:- इस स्थिति में सुधार लाने के लिए मीर कासिम ने कंपनी के साथ समझौता करने का प्रयत्न किया। परंतु कोई हल नहीं निकला। अतः उसने देसी व्यापारिओं को भी निशुल्क व्यापार करने की अनुमति दे दी। फलतः अंग्रेज एवं भारतीय सभी एक ही पलड़े में आ गए। इससे अंग्रेज आग बबूला हो गए उन्होंने झट मीर कासिम को गद्दी से उतारने और मीर जाफर को उसके स्थान पर नवाब बनाने की घोषणा की। अंग्रेज अफसर ने पटना पर आक्रमण कर दिया। तब मीर कासिम ने क्रोध में आकर पटना में रहने वाले अंग्रेजों का वध करवा दिया। उसने कासिम बाजार पर अधिकार कर लिया परंतु अंत में वो अंग्रेजों से हारकर अवध भाग गया।

बक्सर युद्ध का प्रारंभ:- आत्मरक्षा का कोई उपाय नहीं देखकर मीर कासिम ने पटना से भागकर अवध के नवाब वजीर शुजाउदौला के यहां शरण ली। उस समय नवाब वजीर शुजाउदौला को प्रधानमंत्री के रूप में मुगल सम्राट शाहआलम का साथ भी प्राप्त था। मीर कासिम ने दोनों ही से सहायता की प्रार्थना की। उधर 30 वर्षों से अवध का नवाब बंगाल को

Dr Guddy Kumari (A.N.D College)

ललचाए दृष्टि से देख रहा था। अतः अंग्रेजों के विरुद्ध मुगल सम्राट शाहआलम, अवध का नवाब शुजाउदौला तथा मीर कासिम ने मोर्चा कायम किया। तीनों की संयुक्त वाहिनी और अंग्रेजों की सेना में 1764 के अक्टूबर माह में बक्सर में युद्ध प्रारंभ हुआ। 22 अक्टूबर 1764 ई को मीर कासिम एवं उसके मित्रों की जबरदस्त पराजय हुई। शुजाउदौला रोहिलखंड भाग गया। मीर कासिम भी रणक्षेत्र छोड़कर भाग गया और 12 वर्षों तक इधर-उधर भटकता रहा। अंत में 1777 ई में दिल्ली के निकट अत्यंत दयनीय दशा में उसकी मृत्यु हो गई। इस प्रकार भारत के भाग्य के निर्णायक प्रसिद्ध बक्सर युद्ध का अंत हुआ। अंग्रेजों की यह विजय पूर्णरूप से निर्णयात्मक थी और इसने पलासी के अधूरे काम को पूरा किया।

बक्सर युद्ध के परिणाम:-

बक्सर के लड़ाई के परिणामस्वरूप अंग्रेजों ने अवध के नवाब शुजाउदौला तथा मुगल सम्राट शाह आलम से संधि कर ली। जो इलाहाबाद की संधि के नाम से विख्यात है। इस संधि के निम्नलिखित शर्तें प्रमुख थी :-

शुजाउदौला को अवध का राज लौटा दिया गया। परंतु कड़ा और इलाहाबाद के जिले छीन लिए गए।

नवाब ने कंपनी को पचास लाख ₹ खर्च के रूप में दिया।

Dr Guddy Kumari (A.N.D College)

अवध की सीमा रक्षा के लिए कंपनी ने नवाब को सैनिक सहायता देना स्वीकार किया।

मुगल सम्राट ने अंग्रेजों को बंगाल की दीवानी प्रदान की। अर्थात कंपनी को बिहार बंगाल तथा उड़ीसा में भूमि कर वसूलने का अधिकार मिला। इसके बदले में कंपनी ने उसे कड़ा और इलाहाबाद के दिए और ₹26 पेंशन के रूप में देने का वचन दिया।

72 वर्षीय बुड्ढे मीर जाफर को दूसरी बार बंगाल का नवाब बनाया गया। शासन प्रबंध एवं न्याय प्रशासन के लिए ₹5300000 की सालाना पेंशन मिलने लगी।

भारत में ब्रिटिश साम्राज्य की दृष्टि से बक्सर के युद्ध की विजय का विशिष्ट महत्व है। इस विजय के फलस्वरुप केवल मीर कासिम पराजित नहीं हुआ वर्णन अवध के नवाब वजीर तथा भारत के मुगल सम्राट शाहआलम भी पराजित हुआ। इस प्रकार यह संपूर्ण उत्तरी भारत की पराजय थी। मुगल सम्राट से अंग्रेजों को बंगाल बिहार एवं उड़ीसा की दीवानी प्राप्त हुई। जिससेअंग्रेजों को बंगाल की सत्ता पूर्णता हासिल हो गई। इतना ही नहीं पलासी की विजय के फलस्वरुप जो काम प्रारंभ हुआ था। उसकी पूर्ति भी बक्सर के विजय ने कर दी। आधुनिक भारत के इतिहास में बक्सर के युद्ध को अत्यंत ही महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त है। वस्तुतः बक्सर के युद्ध के फलस्वरुप भारत में ब्रिटिश शासन की नींव

Dr Guddy Kumari (A.N.D College)

मजबूत हो गई। इतनी मजबूत की कोई भी शक्ति उसे हिला नहीं सकती थी। **धन्यवाद**

Dr Guddy Kumari (A.N.D College)